GOVT. BRENNEN COLLEGE CENTRAL LIBRARY THALASSERY

K19P 0232

Reg. No. : ....

Name : ....

II Semester M.A. Degree (Reg./Suppl./Imp.) Examination, April 2019
(2014 Admission Onwards)
HINDI LANGUAGE AND LITERATURE
HIN 2E01 – Women Writing in Hindi & Krishna Sobthi

Time : 3 Hours Max. Marks : 80

I. **चार** प्रश्नों के उत्तर लिखिए । (अधिकतम **150** शब्दों में) **(4×5=20)**

1) स्त्री विमर्श ।

2) समय सरगम का कथ्य पक्ष ।

3) उषा प्रियंवदा की रचनाओं में स्त्री ।

4) महिला लेखन में 'मेहरून्निसा परवेज़' की देन ।

5) हिन्दी की महिला लेखकों की कविता में स्त्री विमर्श ।

6) कृष्णा सोबती की कहानी में स्त्री ।

7) मृदुला गर्ग की रचना में चित्रित नारी चेतना ।

II. **तीन** प्रश्नों पर निबन्ध लिखिए । (अधिकतम **300** शब्द) **(3×12=36)**

8) महिला लेखन के क्षेत्र में मन्नू भण्डारी का स्थान ।

9) सूरज मुखी अंधेरे उपन्यास की कथ्यगत विशेषता ।

10) 'स्त्री' विमर्श के उद्‌भव एवं विकास पर प्रकाश डालिए ।

11) आधुनिक हिंदी कविता में अभिव्यक्त नारी जीवन का परिचय दीजिए ।

12) प्रभा खेतान और नारी विमर्श ।

III. किन्हीं **चार** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए । **(4×6=24)**

13) चन्द्रमा ऊपर से धरती को देखकर दिल में बडा सन्ताप पाता है । पर अपना दुख किसी को नहीं दिखाता । सारे दुख–दर्द अन्दर ही अन्दर पीता रहता है । सो चाँद का कालजा शिलाखंड बन गया है ।

P.T.O.

14) अन्न–पानी दाते का और कर्म करनेवाला मनुक्ख । सच्चे पादशाह आपजी के दरबार में कोई कमी नहीं । ऐसा थान–थानान्तर अपने हिस्से आया जहाँ दूध–सा अन्न और अमृत–सा जल ।

15) नाक–कानों में दमकती नई ब्याहियाँ । भर–जवानी में गोता मारने को तैयार चुलबुली शोख मुटियोर और उठती उम्रें खिलखिल करती कवारियाँ ।

16) अदालत समझे कि न मैं खेलूँ गुड्डियाँ और न मैं सोलहवाँ साल । मैं बालिग हूँ । मेरे अकल–होश ठिकाने है । अपना भला–बुरा समझती हूँ । अपनी मरजी से सरदारों की दहलीज़ लाँघ आई हूँ ।

17) रत्नी ने नि:संकोच आँखों में दिवाकर को मित्रता से निहारा और अपने अन्दर लगी झड़ी में ओट ले लेने को, दिवाकर को कसकर थाम लिया ।

18) किसलिए ..... किसलिए तुम ऐसी सर्द बेरहमी से मेरे ही लिए मुझे 'डीफाइन' किया करते हो । मुझे ही टाइप कर, मेरी टाइप–कॉपी मेरे सामने डाले चले जाते हो ।

19) तुम किसी भी दिन आज की सी बातें नहीं करोगे । मुझे किसके साथ कहाँ जाना चाहिए, यह मेरे सोचने की बात है, किसी और की नहीं ।